International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

वैदिक कालीन नारी की स्थिति

(वेदों में नारी का गौरव)

डॉ.दीपा गुप्ता
असिस्टैंट प्रोफेसर प्राचीन भारतीय
इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
कन्या गुरूकुल परिसर
हरिद्वार
गु.का.वि.वि. हरिद्वार (उतराखंड)

भूमिका:—किसी भी देश अथवा समाज की प्रगति इस बात पर निर्भर करती है कि उस समाज अथवा देश में स्त्रियों की दशा कैसी है? इसी दृष्टि से भारतीय समाज में स्त्रियों को प्रारम्भ से ही गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।[1]इसी प्रकार वैदिक कालीन समाज में स्त्रियों को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। वह सभी दृष्टियों से पुरूषों के समान थी पुरूषों की भांति उनका भी उपनयन संस्कार होता था और वे ब्रह्मचर्याश्रम में प्रवेश कर उच्चतम आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक ज्ञान प्राप्त करती थी। इस काल में हमें अनेक ऐसी विदुषी स्त्रियों के उल्लेख मिलते है जिन्होने ऋग्वेद की अनेक ऋचाओं का प्रणयन किया था। इनमें लोपामुद्रा, विश्वधारा, अपाला, काक्षीवती द्योषा, सिकता, निवावरी, रोमशा तथा उर्वशी आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है।[2]शिक्षा ज्ञान और विदता के क्षेत्र में ही नही बल्कि याज्ञिक कार्यो में भी वे अग्रणी थी। उपनिषदों में भी अनेक विदुषी स्त्रियों के उल्लेख मिलते हैं। जो दर्शन,तत्वज्ञान और तर्क में निपुण थी। बृहदारण्यक उपनिषद में विदेहराज जनक की राजसभा में गार्गी और याज्ञवल्क्य के बीच शास्त्रार्थ का उल्लेख मिलता है। जिसमें गार्गी ने याज्ञवल्क्य जैसे विद्वान महापुरूष को भी अपने गूढ प्रश्नों से मूक कर दिया था।[3]इसी प्रकार याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी भी अत्यन्त विदुषी और ब्रह्मवादिनी महिला थी।[4]

वैदिक कालीन नारी की स्थिति— वेदों में नारी को बहुत आदरणीय स्थान दिया गया है। वैदिक युग में स्त्रियॉ भी पुरूषों के समान शिक्षा प्राप्त करती थी । याज्ञिक कर्मकाण्डो मे पुरूषों को सहयोग प्रदान करती थी और समाज में उनका महत्वपूर्ण एंव एक समुचित स्थान था। बालकों की भांति बालिकाओं का भी यज्ञोपवीत सस्कार होता था, और वे भी ब्रह्मचर्यपूर्वक जीवन व्यतीत करती हुई शिक्षा प्राप्त किया करती थी।[5] अथर्ववेद के एक मंत्रानुसार—ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने के पश्चात ही कन्या युवा पति को प्राप्त करती है।[6]आश्वलायन श्रौतसूत्र में लिखा है कि बालक और बालिका—दोनों के लिए ब्रह्मचर्य समान है। इस प्रकार से वैदिक काल में कन्याओं का उपनयन या यज्ञोपवीत सस्कार होता था। और वे ब्रह्मचर्य आश्रम में रहती हुई विधाध्ययन किया करती थी। स्त्रियों के शिक्षित होने का यही परिणाम था कि यज्ञ सदृश धार्मिक कृत्यों में पत्नी अपने पति का हाथ बंटाती थी और उसके बिना यज्ञ पूर्ण नही हो सकता था।[7] ऋग्वेद में 'जायेदस्तम'शब्द का प्रयोग मिलता है जिसका अर्थ है कि— स्त्री को ही घर कहा गया है।[8]विवाह के पश्चात उसकी पतिगृह में गृहपत्नी, गृहस्वामिनी का अधिकार प्राप्त होता है।[9]एक और उसे पति,सास ससुर आदि की सेवा करने तथा उनकी देख—रेख का उतरदायित्व दिया जाता था। जो दूसरी और उसे गृहस्वामिनी के रूप में सास,ससुर,ननद आदि की सम्राज्ञी कहा गया है।[10]वैदिक काल में स्त्रियों बिना परदे के स्वछन्दतापूर्वक विचरण करती थी वे पुरूषों की भांति सामाजिक और धार्मिक समारोहो एवं उत्सवो तथा सभा और विचार गोष्ठियों में बिना किसी प्रतिबन्ध के सम्मलित होती थी और विचारों का आदान—प्रदान करती थी ऐसे समारोहों तथा उत्सवों में उनका सम्मलित होना स्वागतयोग्य माना जाता था।[11]

लेकिन सम्राज्ञी से तात्पर्य कठोरता और आदेश से नहीं था अपितु वह स्नेह,सेवा, न्याय और उदार चित से परिवार परशासन करती थी। वह पुरूषों की सहधर्मिणी तथा अर्धागणी मानी जाती थी। धार्मिक कार्यो में उसकी उपस्थिति अनिवार्य मानी जाती थी।[12] इस काल में न केवल पत्नी को पति के साथ धार्मिक कृत्यों में भाग लेने का अधिकार था अपितु वह पति के बिना भी स्वंय धार्मिक कृत्य कर सकती थी।[13] समाज में विधवा विवाह तथा नियोग प्रथा बालविवाह तथाा परदाप्रथा जैसी कुरूतियो का समाज में प्रचलन नहीं था। वास्त्व में इस काल में समाज में स्त्रियों का जितना अधिक मान सम्मान और उच्च स्थान था उतना परवर्ती किसी काल में नही रहा।[14] वैदिक युगीन स्त्रियों सुशिक्षित, ज्ञान सम्पन्न, तेजस्वनी और पति से अनुकूल व्यवहार प्राप्त करने की आशा करने वाली होती थी। ब्राह्मण ग्रंथों और उपनिषदों में भी अनेक विदुषी स्त्रियों का उल्लेख विद्यमान है।[15] वेदो में इंद्राणी को आदर्श नारी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इंद्राणी का कथन है कि– मै समाज में मूर्धन्य हूँ, मै अग्रगम्य हूँ, और मै प्रखर वक्ता हूँ मुझे कोई अबला न समझेमै सबला हूँ और वीर पुत्रों की जननी हूँ।[16] ऐतरेय ब्राह्मण में कुमारी गन्धर्वगृहीता का उल्लेख है जिसे वहां परम विदुषी तथा वक्तत्व देने में प्रवीण कहा गया है।[17] 'रामायण' के अनुसार सीता प्रतिदिन वैदिक सूक्तो द्वारा प्रार्थना किया करती थी और राम की माता कौशल्या रेशमी कपडे पहन कर अग्निहोत्र के अनुष्ठान में तत्पर रहती थी। जिसमें कि वह स्वयं मन्त्रों का पाठ किया करती थी।[18] महाभारत मे लिखा है कि पाण्डवों की माता कुन्ती 'अथर्ववेद' में निपुर्ण थी। स्त्रियां अध्यापन का कार्य भी किया करती थी उतर वैदिक काल में दो प्रकार की स्त्रियों का उल्लेख मिलता है। –1 सधोद्वाहा, 2 ब्रह्मवार्दन , जो स्त्रियां ब्रह्मचर्य जीवन का पूर्णतः पालन करने के पश्चात गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करती थी उनको सधोद्वाहा कहा जाता था एवं जो स्त्रियां आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करती थी उनको ब्रह्मवादिन कहा जाता था।[19]शैक्षिक कार्यो के अतिरिक्त वैदिक युग में स्त्रियों को सैनिक कार्यो की भी शिक्षा प्रदान की जाती थी। ऋग्वेद में एक विपला नारी का उल्लेख मिलता है जो युद्ध करते–करते घायल हो गई थी।[20] इस काल में लडकियों का विवाह 16 या 17 वर्ष में होता था। विधवा एंव अतजातीय विवाह भी होता था। बहुपतित्व विवाह एंव रक्त संबधं में विवाह के कुछ चिन्ह मिलते है। उदाहरण के लिए यमी ने अपने भाई यम से विवाह का अनुरोध किया परन्तु यम ने उसे अस्वीकार कर दिया था। मरूतों ने रोदसी को मिलकर भोगा।[21] उसी तरह अश्विन के दो भाई सूर्य की पुत्री सूर्या के साथ रहते थे। किन्तु इस विषय में हम कह सकते है कि यह आदिम अवस्था के अवशेष थे। लेकिन ऋग्वेद काल में बहुपतित्व की प्रथा नही थी। संम्भवतः उच्च कुल में संपन्न लोग एक से अधिक पत्नियॉ रखते थे। इसलिए हम कह सकते है कि पुरूषों में बहुविवाह की प्रथा थी।[22] पूर्व काल में समान उतर वैदिक काल में भी स्त्रियों को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था किन्तु हम परवर्तीकालीन हीन स्थिति का आरम्भ उतर वैदिक काल में होता हुआ देखते है इसके लिए निन्दनीय शब्दों का प्रयोग किया जाने लगा था। शतपथ ब्राह्मण में उसे असत्यभाषी और अन्नत कहा गया है।[23] एतरेय ब्राह्मण में पुत्रियों को दुख का कारण माना गया है। मैत्रायिणी सहिंता में स्त्रियों की तुलना मदिरा एंव पाशा से की गई है। यज्ञ एंव अनुष्ठानादि के अवसर पर सोम पान से वचिंत किये जाने का उल्लेख भी आया है। क्योंकि यह तथ्य समाज में स्त्रियों की स्थिति में गिरावट का प्रतीक माना जा सकता है। अथर्ववेद में पुत्री के जन्म पर खिन्नता का उल्लेख हुआ है। उतर वैदिक युग में भी स्त्रियों की शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता था। कन्याओं को शिक्षा प्राप्त कर लेने के बाद ही विवाह के योग्य माना जाता था। [24] अथर्ववेद में वर्णन हे कि स्त्री पति के साथ सामूहिक यज्ञों एंव युद्धों में भाग लेती थी।[25]

स्त्रियों का सम्पति पर अधिकार :– वैदिक युग में स्त्रियों को सम्पति में अधिकार प्राप्त था या नहीं, यह तथ्य वैदिक संहिताओं से अधिक स्पष्ट नहीं होता। पर ऋग्वेद के एक मन्त्र में यह संकेत अवश्य विद्यमान है, कि संतान न होने पर पति के पश्चात पत्नी को ही सम्पति की स्वामिनी माना जाता था। ऋग्वेद के एक अन्य मन्त्र में उन विधवाओं को जिनके पुत्र होते उनको पति की सम्पति में हिस्सा दिये जाने का उल्लेख विद्यमान है।[26] ऋग्वेद के

एक मन्त्र के अनुसार पुत्र के होने पर उसकी बहिन पैतृक सम्पति में कोई भाग प्राप्त नहीं करती थी।[27] वैदिक काल में यह सत्य रूप से कहा जा सकता है कि पिता की सम्पति का अधिकारी पुत्र ही होता था परन्तु पुत्र न होने पर पुत्री ही उसकी उत्तराधिकारिणी होती थी। पर यदि माता–पिता की सन्तान केवल कन्याये ही हो तो, वे ही पैतृक सम्पति की अधिकारिणी मानी जाती थी। विवाह हो जाने पर भी कन्या धन प्राप्त करने के लिए पितृकुल में आया करती थी।[28] शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि पत्नी पति के दाय की उतराधिकारिणी होती है। दम्पति शब्द का प्रयोग यह स्पष्ट करता है कि पति–पत्नी दोनों परिवार की सम्पति के सयुंक्त स्वामी होते थे। लेकिन कालान्तर के याज्ञिक कर्मकाण्डों में पवित्रता का विचार बहुत अधिक बढने से स्त्रियों को पहले तो याज्ञिक कार्यो से बहिष्कृत कर दिया गया और फिर साम्पतिक अधिकारो से।[29] परवर्ती शास्त्रकारो में सर्वप्रथम बौधायन से स्त्री को दायाधिकार से वंचित किया। उनके अनुसार पत्नी का पति की सम्पति पर कोई अधिकार नही होता क्योकि वह अबला है और सम्पति की रक्षा नही कर सकती।[30] मनु के अनुसार पति के जीवन काल में पत्नी को किसी भी प्रकार की सम्पति का अधिकार नही है। उसे पति से केवल भरण–पोषण प्राप्त करने का ही अधिकार है जो कि उसके पतिता एंव दूषित होने अथवा नैतिक पतन की अवस्था में भी मान्य है।[31] इस प्रकार वैदिक काल में स्त्रियों के सम्पति पर अधिकार के विषय में यही कहा जा सकता है कि वैदिक युग में स्त्रियों का साम्पतिक अधिकार एक सीमा तक विद्यमान था भी और नही भी।

वैदिक युगीन एंव उतर वैदिक नारी की स्थिति में अन्तर– वैदिक काल की नारी एंव उतर वैदिक काल की नारी की स्थिति में अन्तर का प्रश्न आता है कि यही कहना पडता है कि पूर्व वैदिक काल की अपेक्षा उतर वैदिक काल में नारी की स्थिति में काफी अन्तर आ गया था, और नारी की स्थिति उतर वैदिक काल में वह नहीं रही थी जो वैदिक युग में विद्यमान थी।[32] इस समय आकर धीरे–2 नारी की स्थिति में गिरावट आ गई थी और वह शोचनीय हो गई थी ।स्त्रियों को इस समय अनेक अधिकारों से वचिंत कर दिया गया था जो उन्हें पूर्व वैदिक काल में प्राप्त थे। उदाहरणार्थ– इस युग में वैदिक कर्मकाण्ड की जटिलता बढने के कारण यक्षित कार्यो में शुद्धता और पवित्रता के नाम पर आडम्बर बढता गया और नारियो को उनसे वचिंत कर दिया गया। वे वेदों का शुद्ध पाठ भी नही कर सकती थी। जिसके कारण नारी को समाज से वचिंत कर दिया गया।और उन पर बंधन और अवरोध लगा दिये गये। वास्तव में उनकी राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और सभी स्थितियों पर प्रतिबंध लगा दिये गये।[33] जयशंकर मिश्र के अनुसार इस काल में नारी का परम्परागत आदर और सम्मान बराबर बना रहा तथा उसके प्रति समाज की धारणा पूर्ववत् उन्नत बनी रही।[34]

निष्कर्षः–ऊपर लिखित विवरण से पता चलता है कि वैदिक युगीन सभ्यता में नारी की स्थिति बहुत अच्छी थी। क्योकि इस सयम नारी को सभी प्रकार के अधिकार प्राप्त थे। इस काल में संतानोत्पति को आध्यात्मिक, धार्मिक एंव आर्थिक दृष्टि से आवश्यक माना जाता था। वैदिक काल में पुत्र की भांति पुत्री का भी उपनंयन किया जाता था।

और अध्ययन काल में उन्हे ब्रह्मचर्य का पालन करना पडता था। लडकियों को विवाह के समय पिता की सम्पति में से कुछ भाग मिलता था। आजीवन कुंवारी लडकियां पिता के घर रहती थी जहां पर उनका भरण–पोषण होता था।

इस काल के समारोह एंव धार्मिक उत्सवो के समय स्त्रियां वस्त्र, आभूषण एंव श्रृंगार से सुसज्जित होकर पुरूषों के साथ भाग लेती थी। तथा उनके नैतिक जीवन का स्तर काफी ऊॅचा था। वैदिक काल की तुलना में उतर वैदिक युग में स्त्रियों की दशा में काफी गिरावट आ गई थी। इस युग में कन्या का जन्म दुःख का विषय माना जाता था तथा पुत्र मनोकामना का लक्ष्य माना जाता था स्त्री एंव पुरूषों की समानता की भावना क्रमशः समाप्त हो रही थी। वे परिषदों एंव सभाओं में प्रवेश नहीं कर सकती थी। गार्गी मैत्रयी आदि स्त्रियों के उदाहरण इस युग में भी मिलतें है। इस प्रकार से हम कह सकते है कि वैदिक काल में नारी की स्थिति बहुत अच्छी थी । जिसके कारण नारी को समाज के अन्दर अच्छा समझा जाता था। ये वैदिक काल की ही देन है।

सन्दर्भ सूची

1. गुप्ता, देवेन्द्र कुमार, ***प्राचीन भारतीय समाज एंव अर्थव्यवस्था*** प्रकाशन, न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन,दिल्ली 2004 पृ0 315

2.वही, पृ0 316

3.***बृहदारण्यक उपनिषद,*** 3/6/8

4.वही, 3/4/3, ***4/5/1***

5.गुप्ता, दीपा,***वैदिक युगीन सामाजिक, आर्थिक एंव धार्मिक जीवन*** प्रकाशन,सत्यम्पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली संस्करण, 2011 पृ055

6.***अथर्ववेद,*** 11/5/18

7.***तैतिरीय ब्राह्मण,*** 2/2/2/6

8.***ऋग्वेद*** – 3/53/4

9.***गृहान् गच्छ गृहपत्नी यथासः ऋग्वेद***– 10/85/25

10.***ऋग्वेद***– 10/85/46

11. गुप्ता, देवेन्द्र कुमार, ***उपयुर्क्त*** पृ0 316

12.***शतपथ ब्राह्मण,*** 5/1/6/20

13.***ऋग्वेद,*** 4/24/8/4/42/1, 8/11/1

14.गुप्ता, देवेन्द्र, ***उपयुर्क्त*** पृ0 317

15.गुप्ता, दीपा, ***उपयुर्क्त***पृ0 57

16.ऋग्वेद, 10/159/2 ***अथर्ववेद,*** 20/126/9

17.***ऐतरेय ब्राह्मण,*** 5/4

18.गुप्ता, दीपा, ***उपयुर्क्त***पृ0 58

19.वही पृ0 58

20***ऋग्वेद,*** 1/116/15

21.सेगंर, शैलेन्द्र, ***प्राचीन भारत का इतिहास***प्रकाशन एटंलाटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रब्यूटर्स, नई दिल्ली संस्करण 2005 पृ0 76

22.वही पृ0 77

23. वही पृ0 101

24. वही पृ0 101

25.***अथर्ववेद***, 20/126/10

26.***ऋग्वेद,*** 10/102/11

27.वही 3/31/2

28.वही 1/124/7

29.***शतपथ ब्राह्मण,*** 14/7/1–2, 14/5/4/1

30.***बौधायन धर्मसूत्र,*** 2/2/53

31.***मनुस्मृति***, 11/76, 177,188

32. गुप्ता, दीपा, ***उपयुर्क्त*** पृ0 60

33.वही पृ0 60

34.मिश्र, जयशंकर, ***प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास*** पृ0–340